प्राथमिक शिक्षण अभ्यासक्रम - २०१२

भाषा भाग - १

कक्षा : ५ वीं से ८ वीं

विषय : हिंदी (द्‌वितीय भाषा) संपूर्ण

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या - २०१२

भाषा भाग - १

हिंदी (द्वितीय भाषा) संपूर्ण

कक्षा - ५ वीं से ८ वीं

अनुक्रमणिका

अ. क्र.		पृष्ठ
१.	प्रस्तावना	१६९
२.	हिंदी (द्वितीय भाषा) के सामान्य उद्देश्य	१७१
३.	हिंदी (द्वितीय भाषा) के विशिष्ट उद्देश्य	१७२
४.	हिंदी (द्वितीय भाषा) संपूर्ण – पाठ्यक्रम	
	पाँचवीं	१७३
	छठी	१९०
	सातवीं	२०९
	आठवीं	२३२
५.	अध्ययन–अध्यापनासंबंधी निर्देश	२५५
६.	मूल्यांकनसंबंधी सामान्य निर्देश	२५७
७.	उपसंहार	२५८

प्राथमिक शिक्षण अभ्यासक्रम २०१२

कक्षा : ५ वीं से ८ वीं

विषय - हिंदी (द्‌वितीय भाषा) संपूर्ण

प्रस्तावना

भारत विविध संस्कृतियों से समृद्‌ध एक विशाल देश है। अनेक भाषाएँ, बोलियाँ, रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान इसकी विशेषताएँ हैं। बहुक्षेत्रीय, बहुभाषी तथा बहुआयामी देश की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताएँ भी विभिन्न प्रकार की हैं। विविधता में एकता इस देश की गौरवशाली परंपरा है। इस बहुभाषी देश में अंतरप्रांतीय संपर्क, विचारों का आदान–प्रदान, राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकात्मता, संवैधानिक मूल्यों को सुसंगत ढंग से सँजोए रखना आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु हिंदी सशक्त एवं समर्थ भाषा है।

हिंदी मध्ययुग से ही अंतरप्रांतीय संपर्क की भाषा रही है। महाराष्ट्र के कुछ संतों ने मराठी के साथ–साथ हिंदीमें भी रचनाएँ की है। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में अंतरप्रांतीय संपर्क की भाषा के रूप में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी भारतीय गणराज्य की राजभाषा रही है। हिंदी को पढ़ना संवैधानिक तथा व्यावहारिक आवश्यकता है। इन बातों को दृष्टिगत रखते हुए 'महाराष्ट्र राज्य अभ्यासक्रम २०१०' के प्रारूप में हिंदी को द्‌वितीय (संपूर्ण एवं संयुक्त) भाषा के रूप में कक्षा पाँचवी से रखा गया है।

लिपि, शब्द–भंडार और वाक्य रचना की दृष्टि से मराठी भाषा हिंदी के समीप होने के कारण तथा प्रचार–प्रसार के अन्य माध्यमों के प्रभाव से किसी–न–किसी रूप में कक्षा पाँचवीं में आनेवाले मराठी भाषी तथा कुछ सीमा तक अन्य भाषी विद्‌यार्थी हिंदी से परिचित रहते हैं। अतः हिंदी उनके लिए सहज, सरल, सुगम एवं पूर्व परिचित भाषा है।

इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्‌यक्रम बनाते समय जिन बिंदुओं का समावेश किया गया है, वे निम्नानुसार हैं –

विद्‌यार्थियों को मातृभाषा जगत से हिंदी–विश्व में ले जाते हुए उनकी शारीरिक, मानसिक, भावनिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को अंतर्भूत किया गया है। २००५ के राष्ट्रीय पाठ्‌यचर्या ढाँचे (NCF) में भाषा शिक्षा के संदर्भ में दिए गए निर्देशों का ध्यान रखा गया है। इसी तरह आर.टी.ई.के निर्देश भी ध्यान में रखे गए हैं। अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में विद्‌यार्थियों के भाषिक कौशलों के आकलन, उपयोजन, सर्जनशील प्रयोग आदि क्षमताओं के विकास को विशेष महत्व दिया गया है। ज्ञानरचनावाद का ध्यान रखते हुए पाठ्‌यक्रम पूर्णतः बाल– केंद्रित बनाया गया है। पाठ्‌यक्रम में यथास्थान परिसर अध्ययन को समाविष्ट करते हुए जीवन कौशलों के विकास का पूरा ध्यान रखा गया है। लिंग समभाव के तत्त्व एवं मूल्यशिक्षा को पाठ्‌यक्रम में यथोचित स्थान देते हुए केंद्रीय आधारभूत तत्त्वों का

भी समावेश किया गया है। पाठ्यक्रम में जगह–जगह अत्यंत स्वाभाविक ढंग से भाषा के साथ अन्य विषयों का तालमेल बिठाया गया है। साथ ही इस बात पर भी विचार किया गया है कि रोचक शिक्षा में कहीं भी बाधा न आए। यह सब करते हुए विद्यार्थियों का निरंतर एवं सर्वांगीण मूल्यांकन भी होता रहे, इस बात का भी ध्यान रखा गया है। परीक्षा पद्धति को अधिक सरल, सहज, सुगम एवं लचीला बनाया गया है।

इस पुनर्रचित नवीन पाठ्यक्रम में जहाँ एक ओर जनतांत्रिक नीति, योजना को प्राधान्य दिया गया है, रटने की पद्धति का परित्याग किया गया है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक भारतीय शिक्षा तंत्रों के प्रयोग पर भी ध्यान रखा गया है। जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, कार्यानुभव, कला शिक्षा विश्वशांति तथा विश्व बंधुत्व की भावना को पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है। भाषाई खेलों के माध्यम से भाषा की शिक्षा को तनाव रहित एवं रोचक बनाया गया है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में इस बात पर भी विचार किया गया है कि शिक्षा से विद्यार्थियों में सर्जनशीलता निर्मित हो, वे उपक्रमशील बनें तथा उनमें शोधदृष्टि का निर्माण हो। हिंदी को व्यवसायोन्मुख बनाया गया है। इसी तरह राज्य एवं राष्ट्र की समस्याओं को भी ध्यान में रखा गया है। भाषा शिक्षा के सर्वसामान्य उद्देश्य एवं द्वितीय भाषा के रूप में पाँचवीं से आठवीं तक हिंदी के विशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट रूप से दर्ज किए गए हैं। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में अध्ययन–अध्यापन विषयक नई सोच, नई पद्धति, जीवन कौशल, आधुनिक तकनीक एवं तत्त्व, व्यावहारिक परिवर्तन, निरंतर सर्वांगीण क्रमिक मूल्यांकन के प्रयोगशील, प्रभावी और समयोचित स्वरूप को भी स्वीकार किया गया है।

वर्तमान के साथ भविष्य की माँगों तथा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को हिंदी भाषा पर अधिकार के संदर्भ में सभी अर्थों में सक्षम बनाना अपने–आपमें एक बड़ा उद्देश्य है। इसकी पूर्ति हेतु प्रस्तुत पाठ्यक्रम में कई बातों का समावेश करना पड़ा, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। प्रश्न उपस्थित हुआ कि इन सबको समेटने के लिए /समाहित करने के लिए कौन–सा प्रारूप (Format) निश्चित किया जाए? पाठ्यक्रम पुनर्रचना समिति ने लंबी बहस के बाद भाषाई कौशलाधिष्ठित प्रारूप निश्चित किया। इसमें चार भाषाई कौशलों के साथ हिंदी की व्याकरणिक संरचना(क्रियात्मक व्याकरण) तथा व्यवहार एवं विविध विषय क्षेत्रों में हिंदी प्रयोग के स्वरूप (व्यावहारिक सृजन) को सर्वोपरि स्थान देना कई कारणों से तर्कसंगत एवं उपयुक्त लगा। परिणामतः पुनर्रचित पाठ्यक्रम में भाषाई कौशलों/ क्षेत्रों को सबसे ऊपर रखते हुए हर कौशल/ क्षेत्र के घटकों/ उपघटकों को उसके अंतर्गत क्रमानुसार स्थान दिया गया है। इस पद्धति को अपनाने से भाषाई कौशलों/ क्षेत्रों के अधिकाधिक घटकों, उपघटकों को स्थान मिल पाया है।

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा सूचित 'E R A C' अर्थात E- Experience, R- Reaction, A- Application, C- Consolidation के अनुरूप पाठ्यक्रम की रचना किए जाने पर समिति के सदस्यों में पर्याप्त चर्चा के बाद पाँचवीं से आठवीं कक्षा का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से तैयार किया गया है।

सामान्य उद्देश्य

महाराष्ट्र के विद्यार्थी संचार माध्यमों द्वारा सामान्य हिंदी भाषा से परिचित हैं। हिंदी और मराठी दोनों भाषाएँ देवनागरी में लिपिबद्ध होने से पठन–पाठन के लिए सहज हैं। दोनों भाषाओं में शब्दावली के स्तर पर अधिक मात्रा में समानता है। प्रचार–प्रसार के विविध माध्यमों के कारण हिंदी भाषा शहरों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रचलित है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षा के निम्नलिखित सामान्य उद्देश्य निश्चित किए गए हैं –

१. विविध माध्यमों का उपयोग कर श्रवण क्षमता का विकास करना।

२. हिंदी में धाराप्रवाह तथा प्रभावी संभाषण का विकास करना।

३. विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य पठन के प्रति रुचि जागृत करना।

४. हिंदी के माध्यम से साहित्यिक रसास्वादन एवं सौंदर्यबोध विकसित करने के साथ ही अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

५. दैनिक जीवन तथा अन्य विषयक्षेत्र (साहित्य, विज्ञान, संचार माध्यम, विधि, स्वास्थ्य आदि) में हिंदी का प्रयोग एवं अन्य विषयों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी की जीवनाभिमुखी, व्यवसायोन्मुखी तथा जीवन कौशलपरक शिक्षा के प्रति उन्मुख करना।

६. उचित भाषाप्रयोग द्वारा, हिंदी के अनौपचारिक तथा औपचारिक भाषा रूपों में सामंजस्य स्थापित करना।

७. विविध उपक्रमों द्वारा संवैधानिक मूल्यों (स्वतंत्रता, समता, न्याय, बंधुत्व) तथा राष्ट्रीय एकात्मता, राष्ट्रप्रेम एवं धर्म निरपेक्षता के पोषण हेतु प्रवृत्त करना।

८. हिंदी के माध्यम से सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक विरासत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, श्रमनिष्ठा, परदुखकातरता, प्राणीमात्र के प्रति दया, खेलभावना, सत्यनिष्ठा, आचारनिष्ठा आदि मानवीय मूल्यों के प्रति सजगता पैदा कर इन गुणों को आत्मसात करने की ओर उन्मुख करना।

९. हिंदी के माध्यम से आपातकालीन प्रबंधन, मानवाधिकार एवं 'सर्व समावेशित शिक्षा' के प्रति जागृति पैदा करना।

१०. हिंदी के माध्यम से विद्यार्थियों में व्यक्तिगत चारित्रिक गुणों तथा जीवन कौशलों को विकसित करना।

विशिष्ट उद्देश्य

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन पाँचवीं कक्षा से आरंभ किया जा रहा है। इस निर्णय के अनुसार हिंदी भाषा के अध्यापन में अधिक सजगता आवश्यक हो गई है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करते समय हिंदी अध्ययन–अध्यापन के विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखना अधिक आवश्यक है। विशिष्ट उद्देश्यों में मूलभूत कौशलों एवं क्षमताओं को समाविष्ट किया गया है। सतत सर्वंकष क्रमिक मूल्यमापन के आधार पर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास अपेक्षित है। तदनुसार पाँचवीं से आठवीं कक्षा तक द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के विशिष्ट उद्देश्य आगे दिए हैं –

१. आकाशवाणी, चलचित्र, दूरदर्शन, संगणक तथा अन्य दृक्– श्रव्य माध्यमों और शैक्षणिक संसाधनों के माध्यम से रोचक प्रेरक परिस्थितियों के निर्माण द्वारा विद्यार्थियों को स्वयंस्फूर्ति से श्रवण हेतु प्रवृत्त करना।

२. सरल–सुगम विषय पर हिंदी में बातचीत करने तथा अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु प्रोत्साहित करना।

३. शैक्षणिक संदर्भ–सामग्री कोना एवं चलवाचनालय द्वारा वाचन के लिए प्रेरित करना। सौंदर्यबोध के प्रति उद्यत करना।

४. अपने अनुभव विश्व, कल्पना एवं समसामयिक विषयों पर लिखित रूप से अपने विचार प्रकट करने के लिए प्रवृत्त करना तथा कलात्मक अभिव्यक्ति की ओर उन्मुख करना।

५. शांतिपूर्ण, तनावमुक्त, बोझरहित, दंडमुक्त वातावरण में शिक्षा के लिए प्रेरित करना तथा हिंदी का भूगोल, गणित, सामान्य विज्ञान, इतिहास आदि अन्य विषयों के साथ सहसंबंध स्थापित करने की चेतना जगाना।

६. निरीक्षण एवं विविध कृतियुक्त उपक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को भाषिक सर्जनशीलता के लिए प्रेरित करना।

७. बोली भाषा का आदर करते हुए मानक भाषा के व्यावहारिक प्रयोग हेतु उन्मुख करना। विद्यार्थियों को दैनिक सामान्य व्यवहार तथा विशिष्ट विषय क्षेत्रों (बैंक, पत्रकारिता, विधि, विज्ञान इत्यादि) में परंपरागत एवं आधुनिक तकनीक के माध्यम से भाषा के प्रयोग के लिए सक्षम बनाना। विविध सेवाओं, व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा की जानकारी देकर उसके प्रयोग के लिए प्रवृत्त करना।

८. भाषाओं के समन्वय द्वारा भावात्मक एकता, देशप्रेम एवं विश्वबंधुत्व के परिपोषण हेतु उद्यत करना।

९. हिंदी द्वारा संवैधानिक मूल्यों, पर्यावरण संरक्षण–संवर्धन एवं स्त्री–पुरुष समानता के प्रति निष्ठा जागृत करना।

१०. हिंदी भाषा के माध्यम से ऐतिहासिक स्थलों, सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण–संवर्धन की चेतना पैदा करना।

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा (संपूर्ण) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र – श्रवण **कक्षा – पाँचवीं**

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – ''बूझो तो जानें''- पतंग के बारे में शब्द शृंखला बनाना		पतंग में लगने वाली सभी वस्तुओं के नाम- माँजा, चरखी, रंगीन कागज, लेई, तीली और मैदान आदि शब्दों की शृंखला बनाता है।	निरीक्षण
१.	पूर्व परिचित विषयों से संबंधित लयात्मक गीत सुनाना, अभिनय गीत सुनाना।	लयात्मक गीत संग्रह, अभिनय गीत संग्रह, रोल अप बोर्ड, रेडियो, दूरदर्शन, सी.डी.,डी.वी.डी. ध्वनिफीत	* लयात्मक गीत, अभिनय गीत सुनने में रुचि लेता है। * समझते हुए सुनने में रुचि लेता है। * रेडियो, दूरदर्शन, सी.डी., डी.वी.डी. पर आने वाले लयात्मक गीत, अभिनय गीत ध्यान से सुनता है।	निरीक्षण प्रात्यक्षिक कृति
२.	बोधकथा, चुटकुले, सुनना/सुनाना। (सत्य, बंधुता, प्रेम, न्याय, शांति- संबंधी बोधकथा) १ से २५ तक के अंक सुनना/ सुनाना।	बोधकथा संग्रह, सी.डी. डी.वी.डी. ध्वनिफीत दूरदर्शन, रेडियो। संदर्भ साहित्य	* बोधकथा, चुटकुले रुचिपूर्वक सुनता है। सुनी हुई बोधकथा, चुटकुलों को दोहराने में रुचि लेता है। * समझते हुए सुनने में रुचि लेता है। * सरल प्रश्नों के उत्तर देता है। * बोधकथाओं के माध्यम से सम अनुभूति एवं सहसंबंध स्थापित करता है। * एकाग्रता से सुनने की आदत लगती है। * एक से पचीस तक के अंक सुनता/सुनाता है।	निरीक्षण प्रात्यक्षिक

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	मात्रा रहित शब्द परिचय -	मात्रा रहित शब्द कार्ड, चार्ट, ध्वनिफीत, सी.डी., डी.वी.डी	* मात्रा रहित शब्दों को रुचिपूर्वक सुनता है। सुने हुए शब्दों को दोहराता है। * मात्रा रहित शब्दों का उपयोग करते हुए सरल वाक्य बनाता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * मातृभाषा और हिंदी के शब्दों में समन्वय प्रस्थापित करता है। * सुने हुए शब्दों का प्रयोग सुनाते समय करता है।	निरीक्षण प्रात्याक्षिक कृति
४.	मात्रा सहित शब्द परिचय	मात्रा सहित शब्द/चार्ट/ शब्दकार्ड, दूरदर्शन, सी.डी.,डी.वी.डी.	* मात्रा सहित शब्दों को सुनने में रुचि लेता है। * मात्रा सहित शब्दों को सुनकर उनका आकलन करता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * मात्रा रहित एवं मात्रा सहित शब्दों की भिन्नता सुनकर समझता है। * ह्रस्व एवं दीर्घ मात्राओं को सुनकर पहचानने की ओर उन्मुख होता है। * मात्रा रहित एवं मात्रा सहित शब्दों का प्रयोग करके छोटे-छोटे वाक्य बनाकर सुनाता है। * ह्रस्व, दीर्घ मात्राओं से युक्त वर्णों का वर्गीकरण करता है।	निरीक्षण प्रात्यक्षिक कृति

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	स्वर, व्यंजन, विशेषवर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर का श्रवण के माध्यम से परिचय	चित्र कार्ड, वर्ण चार्ट, शब्द कार्ड, ध्वनिफीत सी.डी., डी.वी.डी.	स्वर, व्यंजन, पंचमाक्षर, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर आदि का श्रवण के माध्यम से परिचय प्राप्त करता है। ✻ स्वर–वर्णों की ध्वनियों को सुनकर उनके अंतर को समझता है। ✻ स्वर और व्यंजन की ध्वनियों के अंतर को सुनकर पहचानता है। ✻ अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर को स्पष्ट रूप से सुनकर उनके उच्चारण की भिन्नता को समझने का प्रयास करता है। ✻ मातृभाषा एवं हिंदी के वर्णों की ध्वनियों में सहसंबंध स्थापित करता है एवं उनके अंतर को श्रवण के माध्यम से समझता है। ✻ घर, परिसर, सुनी हुई ध्वनियों को विद्यालय में सुनी हुई ध्वनियों से सहसंबंध स्थापित करता है।	निरीक्षण प्रात्यक्षिक कृति

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण–संभाषण **कक्षा–पाँचवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	❋ **भाषाई खेल** – 'मैं हूँ ....।' खेल की कृति–फल,फूल,प्राणी, वस्तु आदि का चित्र लेकर एक–एक विद्यार्थी द्‌वारा वाक्य शृंखला बढ़ाना।	❋ चित्र, चित्रचार्ट, ❋ प्रक्षेपक, ❋ फोल्डर	❋ चित्र देखकर प्रत्येक विद्यार्थी एक–एक वाक्य बोलता है। ❋ चित्र देखकर शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करता है। ❋ भाषण–संभाषण में बिना झिझक सहभागी होता है। ❋ मातृभाषा के शब्द तथा हिंदी के शब्दों में समन्वय का प्रयास करता है।	❋ निरीक्षण ❋ प्रात्यक्षिक ❋ मौखिककार्य ❋ कृति ❋ कक्षाकार्य
१.	❋ स्व–परिचय एवं परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदारों का परिचय	❋ परिवार का चित्र	❋ अपना, अपने परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदारों का परिचय उत्साह व स्वयं स्फूर्ति से देता है। ❋ परिवार के बारे में जानकारी देने की क्षमता प्राप्त होती है। ❋ अपने परिवार, बड़ों तथा रिश्तेदारों के प्रति आत्मीयता एवं आदरभाव का निर्माण होता है। ❋ पड़ोसी परिवारों के साथ सहसंबंध स्थापित करने की ओर उन्मुख होता है। ❋ सम अनुभूति का निर्माण होता है। ❋ 'स्व' की पहचान होती है।	❋ निरीक्षण ❋ कक्षाकार्य ❋ मौखिककार्य

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	* दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं का वर्णन करना।	* चार्ट * चित्र	* चित्र देखकर उन चीजों के उपयोग के बारे में बताता है। * सरल प्रश्नों के उत्तर देने में रुचि रखता है। * चर्चा में सहभागी होता है। * प्रश्न पूछकर जानकारी प्राप्त करता है। * बातचीत में आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।	* दैनिक निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य
३.	* घरेलू कार्यक्रम में सम्मिलित होकर विद्यालय में चर्चा करना।	* त्योहार, जन्मदिन नामकरण विधि, विवाह आदि से संबंधित चार्ट, सी.डी., डी.वी.डी. छायाचित्र आदि	* कक्षा में उत्साह के साथ घरेलू कार्यक्रम की जानकारी देता है। * अपने मित्रों के घर में मनाए गए कार्यक्रम की जानकारी देने की क्षमता विकसित होती है। * मंच पर घरेलू कार्यक्रम की जानकारी बिना झिझकते हुए देता है। * पड़ोसियों एवं मित्रों के परिवार के कार्यक्रमों से सहसंबंध स्थापित करने की क्षमता में वृद्धि होती है। शब्द संपत्ति का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य
४.	* हाव–भाव के साथ पूर्व परिचित बालकथा एवं बालगीत प्रस्तुत करना। (मित्रता, स्वच्छता संबंधी) * एक से पचीस तक के अंकों का प्रयोग करना।	* सी.डी. * डी.वी.डी * फोल्डर * गिनती चार्ट	* मातृभाषा एवं हिंदी की पूर्वपरिचित कहानियों एवं बालगीत उत्साह तथा उचित हाव–भाव के साथ प्रस्तुत करता है। * एक से पचीस तक के अंकों का व्यवहार में प्रयोग करता है।	* निरीक्षण

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* पंचतंत्र, इसपनीति की कहानियाँ * चित्रकथा पुस्तिका	* आत्मविश्वास एवं एकाग्रता में वृद्धि होती है। * जीवनमूल्यों एवं जीवन कौशलों की ओर उन्मुख होता है। * घर–परिवेश में बातचीत करते समय उचित हाव–भाव का प्रयोग करने की ओर उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक
५.	* स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, तथा विशेष वर्णों का स्पष्ट उच्चारण करना।	* वर्ण कार्ड * वर्ण चार्ट * चित्र कार्ड * सी.डी. * डी.वी.डी * ध्वनिफीति	* चित्रों के माध्यम से स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग, विशेष वर्ण, संयुक्तवर्ण आदि का उचित उच्चारण करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की ध्वनियों, वर्णों की समानता एवं भिन्नता पहचानने की ओर अग्रसर होता है। * औपचारिक–अनौपचारिक संभाषण में वर्णों एवं शब्दों का सही उच्चारण करता है।	* निरीक्षण * मौखिककार्य * कृति

भाषाई कौशल/क्षेत्र : वाचन **कक्षा–पाँचवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	✼ **भाषाई खेल–** मेल–मिलाप अलग–अलग विद्‌यार्थियों के गले में चित्र कार्ड और संबंधित शब्द कार्ड लटकाकर चित्रों और वर्णों की संगति मिलाना।	✼ चित्र कार्ड ✼ शब्द कार्ड ✼ वर्ण कार्ड	✼ खेल के माध्यम से विद्‌यार्थी चित्र शब्द और वर्णों की संगति बिठाने में रुचि रखता है। ✼ वर्णों को पहचानता है। ✼ परिवेश के साइन बोर्ड एवं फलक पर लिखे वर्णों को पहचानने का प्रयास करता है। ✼ मातृभाषा एवं हिंदी के वर्णों की रचना में समन्वय स्थापित करता है।	✼ निरीक्षण ✼ प्रात्यक्षिक ✼ मौखिककार्य ✼ कृति
१.	✼ **अनुवाचन–** लयात्मक गीत, बोध कथा, छोटे–छोटे वाक्य, लयात्मक शब्द एवं वर्णमाला।	✼ वर्ण कार्ड ✼ शब्द कार्ड ✼ वाक्य पट्‌टियाँ ✼ रोल अप बोर्ड ✼ प्रक्षेपक	✼ अध्यापक/अभिभावक द्‌वारा पढ़े गए लयात्मक गीत, कथा आदि का रुचिपूर्वक अनुवाचन करता है। ✼ वर्ण, शब्द की पहचान करने हेतु अग्रसर होता है। ✼ श्रवण एवं वाचन की एकाग्रता में वृद्‌धि होती है। ✼ शब्द संपत्ति का विकास होता है। ✼ बोध कथा से प्राप्त जीवन मूल्यों एवं कौशलों को जीवन में उतारने के प्रति उन्मुख होता है।	✼ निरीक्षण ✼ मौखिककार्य

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	* **मात्रा रहित वर्णों का वाचन करना.** (स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर)	* मात्रा रहित शब्द कार्ड * वर्ण कार्ड * शब्द पट्टी	* मात्रा रहित वर्ण,शब्दों का वाचन करता है। वर्णों के अवयवों को पहचानता है। * वर्णों की संगति बिठाकर सार्थक शब्द बनाता है। * समान अवयव वाले वर्णों का वर्गीकरण करता है। वर्गीकरण की क्षमता विकसित होती है। * वर्णों से नए-नए शब्द बनाकर वाचन करता है। * रचनात्मकता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षाकार्य * सहपुस्तक मूल्यांकन * कृति।
३.	* **मात्रा सहित वर्णों का वाचन करना.** (स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर)	* शब्द कार्ड * मात्रा सहित शब्द कार्ड * चित्र कार्ड * शब्द पट्टियाँ * सुविचार तथा घोष वाक्य चार्ट	* मात्रा सहित शब्दों का वाचन करता है। * मात्रा सहित शब्दों से वाक्य बनाकर वाचन करता है। * विद्यालय, परिवेश में लगाए गए फलकों का वाचन करता हैं। * वाचन के प्रति रुचि जागृत होती है। * प्रवाहमय वाचन की ओर उन्मुख होता है। * एकाग्रता से किए हुए पठन का उपयोग आवश्यकता के अनुसार अन्यत्र करने की क्षमता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * कृति

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	✻ **मुखर एवं मौन वाचन–** वर्णमाला, लयात्मक शब्द, बोधकथा, लयात्मक गीत। (समयपालन, अनुशासन से संबंधित कथा)	✻ लयात्मक शब्द चार्ट ✻ संदर्भ साहित्य तालिकाएँ ✻ वर्णमाला चार्ट ✻ लयात्मक गीत संग्रह ✻ बालकथा संग्रह ✻ रोलअप बोर्ड	✻ मुखर एवं मौन वाचन में रुचि लेता है। ✻ एकाग्रता के साथ मौन वाचन करता है। ✻ लयात्मक गीत, बोध कथा के वाचन से वाचन में प्रवाह लाने का प्रयास करता है। ✻ आदर्श वाचन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेता है। ✻ समयपालन, अनुशासन आदि गुणों का महत्व पहचानता है।	✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय
५.	✻ **दिनदर्शिका** (कैलेंडर), समाचार पत्र, फलक का वाचन।	✻ तालिकाएँ ✻ समाचार पत्र/पत्रिकाएँ ✻ दिनदर्शिका (कैलेंडर) ✻ भित्तिफलक	✻ वाचन में रुचि लेता है। ✻ समाचारपत्र के खेल, मनोरंजन आदि समाचारों का वाचन करने में रुचि लेता है। ✻ फलकों का वाचन करके आशय को समझता है। ✻ समाचारपत्र का प्रतिदिन वाचन करने में रुचि जागृत होती है। ✻ समाचारपत्र के रुचि के विषयों पर वाचन करके चर्चा करता है। परस्पर संबंध की भावना विकसित होती है।	✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ कृति

भाषाई कौशल/क्षेत्र : लेखन **कक्षा–पाँचवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल** – आकृति की पहचान एक दूसरे की पीठ पर उँगली से कोई भी गणितीय आकृति बनाना एवं पहचानना। उदा– गोल, त्रिभुज चतुर्भुज आदि।	–	* रुचि लेते हुए एक–दूसरे की पीठ पर उँगली से गणितीय आकृतियाँ बनाकर पहचानता है। * आकृतियों का रेखन करता है। * तनावों का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक
१.	* **अनुरेखन** – मात्रा रहित, मात्रा सहित वर्णों का अनुरेखन करना (वर्ण एवं शब्द) जैसे– क = क , र = र नल = नल माता = माता	* संदर्भ साहित्य	* मात्रा रहित, मात्रा सहित वर्णशब्द आदि का अनुरेखन करता है। * वर्णों के संकेत समझते हुए अनुरेखन करता है। * हिंदी लेखन की प्रारंभिक स्थितियों से परिचित होता है। सुडौल लेखन की ओर अग्रसर होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक
२.	* **अनुलेखन–सुलेखन–** (शब्द एवं वाक्य) अंकों का अक्षरों में लेखन (१ से २५ तक)	* शब्द चार्ट * अंक चार्ट * वाक्य पट्टी * वाक्य चार्ट * सुवचन पट्टी * वर्ण क्रमानुसार विद्यार्थियों के नामों का चार्ट * घर की वस्तुएँ * परिसर की वस्तुओं का चार्ट (फल–फूल) आदि।	* शब्द एवं वाक्यों का अनुलेखन एवं सुलेखन करने में रुचि लेता है। * सावधानी से सुपाठ्य, सुडौल, शुद्ध अनुलेखन सुलेखन करता है। * एक से पचीस तक के अंकों के लिए हिंदी शब्दों से परिचित होता है। * अंकों का लेखन व्यवहार में प्रयोग करता है। * परिवेशीय वस्तुओं के हिंदी शब्दों से परिचित होते हुए लेखन में प्रयोग करता है। * सुलेखन प्रतियोगिताओं में सहभागी होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपुस्तक कसौटी * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वकष मूल्यमापन
३.	* **श्रुत लेखन शुद्ध लेखन–** (सामान्य, विशिष्ट, संयुक्त वर्ण वाले शब्द एवं वाक्य)	* चित्र कार्ड * शब्द कार्ड * वाक्य पट्टी * घोषवाक्य पट्टी * सुवचन पट्टी (केवल अध्यापकों के उपयोग हेतु)	* ध्यानपूर्वक आकलन करते हुए श्रुत लेखन में रुचि लेता है। * शब्दवाक्य आदि का शुद्ध लेखन करने हेतु अग्रसर होता है। * शुद्ध लेखन प्रतियोगिता में सहभाग लेता है। * लेखन में शुद्धता लाने का प्रयास करता है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	* **प्रश्नों को समझते हुए उत्तर लेखन** (एक शब्द एवं एक वाक्य में,)	* प्रसंग चित्र चार्ट * चित्र कार्ड * फलक पर लिखी हुई सामग्री * मानचित्र * दिनदर्शिका (कैलेंडर) * प्रश्नसंच	* प्रश्नों के उत्तर लिखने में रुचि लेता है। * चित्रों को देखकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखता है। * मानचित्रों का पठन करते हुए उत्तर लिखता है। * परिसर के प्राणियों, वस्तुओं के हिंदी नामों का लेखन करता है। * पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित होती है। * आकलन क्षमता का विकास होता है। * क्या,कब,कहाँ,क्यों आदि से बने प्रश्नों को समझते हुए उत्तर लिखता है। * छोटे प्रश्न बनाकर लिखता है।	* निरीक्षण * सहपुस्तक कसौटी * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	* चित्र के आधार पर लेखन करना।	* चित्र कार्ड * फोल्डर * चित्रकथा	* चित्रों को देखते हुए उसका स्वयं स्फूर्ति से वर्णन लिखता है। * चित्रों के आधार पर छोटी कहानी लिखता है। * घोष वाक्य सुवचन का लेखन करता है। * समझते हुए लिखता है। * शब्द-संपदा में वृद्धि होती है। * लेखन कौशल का विकास होता है। * सृजनशीलता, कल्पनाशक्ति का विकास होता है। * भावनाओं का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

भाषाई कौशल/क्षेत्र : क्रियात्मक व्याकरण

कक्षा–पाँचवीं

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल** – वर्णपूर्ति * क·······म * म·······ली * मीठा·······	* चित्र कार्ड * शब्द कार्ड	* चित्र देखकर रिक्त वर्ण की पूर्ति करते हुए शब्द बनाता है। शब्द संपत्ति में वृद्धि होती है। तनाव का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * सहपाठी मूल्यांकन
१.	* **वर्ण परिचय–** (स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, संयुक्त वर्ण, अनुनासिक, विसर्ग, हल चिह्न)	* वर्ण कार्ड * वर्णक्यूब(घन) * वर्ण सारिणी * शब्द सारिणी	* रुचि के साथ स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण, विशेष वर्ण आदि से परिचित होता है। * वर्गीकरण क्षमता, वर्ण, स्वर, व्यंजन आदि की ओर उन्मुख होता है। * निर्णय क्षमता तथा समस्या समाधान की ओर अग्रसर होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
२.	* **शब्द परिचय–** समान वर्ण वाले शब्द–कलकल, छलछल,ठनठन,छमछम आदि समानार्थी, विरुद्धार्थी, शब्दसमूह के लिए एक शब्द। * हिंदी–मराठी में समान अर्थ में आनेवाले शब्द– जैसे– डमरू–डमरू परी–परी * समोच्चरित किंतु भिन्न अर्थ वाले शब्द– जैसे– शिक्षा(हिंदी) – शिक्षण शिक्षा (मराठी)– सजा,दंड।	* चार्ट * चित्र * शब्द कार्ड * शब्द सारिणी * फोल्डर्स	* लेखन, वाचन, भाषण–संभाषण में समानार्थी विरुद्धार्थी, समान वर्ण वाले शब्द आदि का उचित प्रयोग करता है। * वर्गीकरण, आकलन क्षमता के विकास की ओर अग्रसर होता है। * निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * प्रभावी भाषण–संभाषण एवं लेखन की ओर उन्मुख होता है। * मराठी–हिंदी में पाए जाने वाले शब्दों के अर्थ एवं उच्चारण की दृष्टि से भिन्नता और समानता से अवगत होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी।

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* **शब्दों का लिंग वचन प्रयोग –** (स्त्री वाचक, पुरुष वाचक शब्द, एक वचन–बहुवचन वाले शब्दों का प्रयोग)	* चित्र कार्ड * शब्द कार्ड * शब्द चार्ट * फोल्डर	* स्त्रीलिंग–पुल्लिंग, एकवचन, बहुवचन शब्दों को पहचानता है। * वाक्यों में लिंगवचन का ध्यान रखते हुए शब्दों का प्रयोग करता है। * भाषा प्रयोग में शुद्धता एवं सरलता की क्षमता का विकास होता है। * वर्गीकरण,विश्लेषण,तार्किक एवं निर्णय की क्षमता का विकास होता है। * लिंग एवं वचन परिवर्तन करते समय शब्दों में भी उचित परिवर्तन का ध्यान रखता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपुस्तक कसौटी * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प
४.	* **विराम चिह्न –** अल्पविराम, अर्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नवाचक चिह्न.	* चिह्नों के चार्ट * विराम चिह्नयुक्त छोटे–छोटे परिच्छेदों का चार्ट–फलक लेखन	* अल्पविराम, अर्धविराम पूर्णविराम, प्रश्नवाचक चिह्न को पहचानता है। * मातृभाषा एवं हिंदी के विराम चिह्नों की समानता एवं भिन्नता से अवगत होता है। * परिच्छेद लेखन में इन विराम चिह्नों का प्रयोग करता है। * भाषण–संभाषण एवं वाचन करते समय विराम चिह्नों के अनुसार उचित लय–ताल हाव–भाव, तान–अनुतान, आरोह–अवरोह का ध्यान रखते हुए प्रभावशाली प्रस्तुति करता है। * आदर्श वाचन एवं भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * अनुशासित जीवन जीने की ओर उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी।

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	✻ **वर्तनी का प्रयोग –** वर्ण, संयुक्ताक्षर, विशेष वर्ण, अनुनासिक (चंद्रबिंदु), अनुस्वार, विसर्ग, हलचिह्न, विभक्ति, प्रत्यय आदि का मानक वर्तनी नियमों के अनुसार सरल शब्दों तथा वाक्यों का लेखन करना।	✻ वर्णों एवं शब्दों के मानक रूप का चार्ट, ✻ संदर्भ साहित्य	✻ वर्तनी के मानक रूप से अवगत होता है। ✻ संभाषण, वाचन, लेखन में वर्णों एवं शब्दों के मानक रूप का प्रयोग करता है। ✻ वर्गीकरण, विश्लेषण, निर्णय क्षमता का विकास होता है। ✻ संयुक्ताक्षरों का मानक लेखन एवं उच्चारण करता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ मौखिककार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ सहपुस्तक कसौटी ✻ कक्षाकार्य ✻ प्रकल्प ✻ स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल –** मातृभाषा के शब्दों एवं वाक्यों का हिंदी में मौखिक अनुवाद करना।	* शब्द कार्ड * वाक्य पट्टी * फोल्डर	* रुचि लेते हुए मातृभाषा के शब्दों का हिंदी में मौखिक अनुवाद करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक
१.	* **अनुवाद लेखन –** मातृभाषा के शब्दों एवं वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करना। **उदाहरण**–पाणी–पानी वडक्कम– नमस्कार मीठ–नमक आउजो – आइएगा आदि शब्दों एवं इनसे युक्त वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करना। **उदाहरण –** मला पाणी दे. (मराठी में) मुझे पानी दो। (हिंदी में)	* शब्द कार्ड * वाक्य पट्टी * फोल्डर	* हिंदी के शब्दों का मातृभाषा में मौखिक अनुवाद करते हुए लेखन करता है। * मातृभाषा के शब्दों और वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करते हुए लेखन करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की ध्वनियों वर्णों एवं शब्दों की अर्थ भिन्नता एवं समानता से अवगत होता है। * मातृभाषा एवं हिंदी में सहसंबंध स्थापित करता है। * भाषिक सहिष्णुता की ओर उन्मुख होता है। * भाषिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति में हिंदी का प्रयोग करने हेतु अग्रसर होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * मौखिककार्य * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
२.	* **व्यावसायिक लेखन –** भेंट कार्ड तैयार करके उचित शब्दों का लेखन करना। **उदाहरण–** जन्मदिन, नववर्ष, त्योहार सफलता आदि के बधाई/ अभिनंदन कार्ड बनाकर उसपर संदर्भानुसार लेखन करना।	* कार्ड पेपर, कैंची, पेंसिल, गेंद, पेस्ट आदि. * व्यावसायिक कार्ड	* विभिन्न भेंटकार्ड बनाता है। * (धन्यवाद, स्वागत आदि) भेंटकार्ड बनाते समय रचनात्मक विचार करता है। * उचित शब्दों का उचित स्थान पर आकर्षक लेखन करने की प्रवृत्ति विकसित होती है। * जीवन में सुचारूपन एवं अनुशासन आदि प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख होता है। * कल्पनाशीलता का विकास होता है। * सम अनुभूति विकसित होती है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* **नाट्यीकरण–** कृषक एवं परिसर के सभी व्यवसायियों का हावभाव सहित सामूहिक अभिनय। (डाकिया, डॉक्टर, नर्स, शिक्षक, वकील आदि)	* व्यावसायियों के चित्र कार्ड * व्यवसाय से संबंधित शब्द कार्ड	* कृषक एवं परिसर के व्यवसायियों का हावभाव सहित सामूहिक अभिनय करता है। * कृषक एवं परिसर के व्यवसायियों के प्रति आदर–भाव विकसित होता है। * सम अनुभूति जागृत होती है। * समानता का भाव उत्पन्न होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	* **लिप्यंतरण**–हिंदी के शब्दों का रोमन लिपि (अंग्रेजी) में लेखन– **उदाहरण**–पानी – PANI रमेश – RAMESH अंग्रेजी के शब्दों का देवनागरी (हिंदी)लिपि में रूपांतर करता है। उदाहरण–Ticket टिकट, Bank बैंक	* हिंदी के शब्द कार्ड * रोमन लिपि के कुछ शब्द कार्ड	* हिंदी शब्दों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करने का प्रयास करता है। * देवनागरी के शब्दों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करने की रुचि उत्पन्न होती है। * दोनों लिपियों के लेखन एवं उनके उच्चारण की समानता एवं भिन्नता को समझने का प्रयास करता है। * रोमन लिपि के माध्यम से हिंदी के प्रयोग की रुचि जागृत होती है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * प्रकल्प
५.	* **सांकेतिक चिह्नों का रेखन–लेखन – गणितीय चिह्नः (रेखन, अक्षरों में लेखन)** +, –, =, ∴, ∵, ×, ÷ **मानचित्र** : **अस्पताल** : **यातायात** : ≡, (जेब्रा क्रॉसिंग, शांतिक्षेत्र, शाला–विद्यार्थी क्षेत्र, सिग्नल चिह्न, नो पार्किंग और पार्किंग क्षेत्र आदि।)	* गणितीय, मानचित्र * अस्पताल, यातायात आदि के सांकेतिक चिह्न एवं नाम कार्ड, तालिका, चार्ट।	* गणितीय, मानचित्र, अस्पताल, यातायात के सांकेतिक चिह्नों का रेखन–लेखन करता है। * इन सभी चिह्नों से परिचित होता है। * चिह्नों की सांकेतिक सूचनाओं का पालन करता है। * व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय हित की सूचनाओं के पालन की प्रवृत्ति विकसित होती है। * जीवन में अनुशासन की भावना का विकास होता है।	* सहपुस्तक कसौटी * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * प्रकल्प * उपक्रम

विषय : हिंदी द्‌वितीय भाषा (संपूर्ण)

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण **पाठ्‌यक्रम** **कक्षा–छठी**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेलः 'आओ खेलें अक्षरों की गलियों में' **उदाहरण–** कमल क – कल, कम म – मन, मकई ल – लहर, लड़की; इस तरह अन्य	* चित्र कार्ड * वर्ण कार्ड (मात्रा रहित, मात्रा सहित)	* रुचि पूर्वक विभिन्न अक्षरों से नए–नए शब्द बनाकर सुनाता है। * सुने हुए वर्ण एवं शब्दों को दोहराता है। अन्य विद्‌यार्थी उसका श्रवण करते हैं। * शब्द संपत्ति का विकास होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण
१.	* **बालगीत–** अभिनय गीत सुनना–सुनाना। (पर्यावरण संरक्षण एवं परिसर के संदर्भ में)	* ध्वनिफीत * सी.डी. * डी.वी.डी * संगणक, रेडियो, दूरदर्शन	* बालगीत एवं अभिनय गीत ध्यान पूर्वक सुनने में रुचि लेता है। * कक्षा के अन्य विद्‌यार्थियों को सुने हुए बाल गीत एवं अभिनय गीत सुनाता है। * तनाव एवं भावना का समायोजन होता है। * पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेत होता है। * प्रदूषणों के दुष्परिणामों से बचने की प्रवृत्ति जागृत होती है। * वृक्ष संवर्धन में रुचि लेता है।	* कृति * उपक्रम * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
२.	* साहस कथा(परिसर के संदर्भ में), संवाद सुनना–सुनाना।	* संदर्भ साहित्य * ध्वनिफीत * सी.डी. * डी.वी.डी * दूरदर्शन * संगणक * रेडियो	* साहस कथा (परिसर के संदर्भ में) संवाद ध्यानपूर्वक सुनने–सुनाने में रुचि लेता है। * श्रवण कौशल का क्रमशः विकास होता है। * सुनी हुई सामग्री को हाव–भाव के साथ अन्य विद्‌यार्थियों को सुनाता है। * निडरता, निर्णय क्षमता आदि गुणों का विकास होता है। * परिसर के घटकों से सहसंबंध स्थापित होता है। * परिसर की घटनाओं का वर्णन सुनता–सुनाता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * उपक्रम

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* वाक्य एवं परिच्छेद में आए हुए विशेष वर्णों का परिचय (ज,झ,च,ज्ञ,ड़,ढ़)	वाक्य पट्टी परिच्छेद चार्ट सी.डी. संगणक, रेडियो आदि।	* हिंदी के विशेष वर्णों के उच्चारण की भिन्नता को समझते हुए सुनता है। * वाक्य में आए विशेष वर्णों को सुनता–सुनाता है। * हिंदी और मराठी के विशेष वर्णों के उच्चारण की भिन्नता को सुनकर समझता है।	कृति प्रात्यक्षिक निरीक्षण कक्षाकार्य उपक्रम
४.	* आकाशवाणी, दूरदर्शन, शालेय कार्यक्रम एवं विज्ञापन सुनना–सुनाना।	विज्ञापन पट्टी, रेडियो, दूरदर्शन, कार्यक्रम की सी.डी., डी.वी.डी.	* आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि के कार्यक्रम एवं विज्ञापन ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुनी हुई सामग्री, कार्यक्रम, विज्ञापन अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * शब्द–संपत्ति का विकास होता है। * सुने हुए कार्यक्रमों के माध्यम से भावनाओं का समायोजन होता है। * सुने हुए कार्यक्रमों के माध्यम से जीवन मूल्यों को अपनाने का प्रयास करता है।	कृति, प्रात्यक्षिक निरीक्षण
५.	* स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, अनुनासिक अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, हल चिह्न का पुनरावर्तन १ से ५० तक के अंकों को सुनना–सुनाना।	स्वर,व्यंजन, विशेष वर्ण, अनुस्वार, विसर्ग संयुक्ताक्षर, हल् चिह्न का कार्ड, सी.डी., डी.वी.डी. अंक एवं शब्दों में १ से ५० तक की अंक तालिका, अंक–कार्ड।	* स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षरों को ध्यान–पूर्वक सुनता/सुनाता है। * १ से ५० तक के अंकों को सुनता/सुनाता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की ध्वनियों की समानता–भिन्नता से अवगत होता है। * बोलचाल में अंकों का सही प्रयोग करके सुनाता है।	कृति, प्रात्यक्षिक निरीक्षण

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण-संभाषण

कक्षा-छठी

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेलः** ''आज मैंने किया ....'' कृति- सभी विद्‌यार्थी सामूहिक रूप से वर्णमाला कहते हैं। शिक्षक बीच में 'रुको' का आदेश देता है। जिस वर्ण पर विद्‌यार्थी रुकेंगे, उस वर्ण से शुरू होने वाले नाम के जितने विद्‌यार्थी होंगे वे गुट से बाहर आकर क्रमशः सुबह से लेकर अब तक क्या किया? पाँच-छह वाक्यों में बताएँगे।	* वर्णमाला का चार्ट	* रुचि लेते हुए खेल में सहभागी होता है। * खेल द्‌वारा तनाव का समायोजन होता है। * सावधानी का विकास होता है। * जीवन की गतिविधियों में क्रमबद्‌धता आती है। * बिना रुके निडर होकर आत्मविश्वास के साथ बोलने की ओर उन्मुख होता है। * परस्पर सहसंबंध स्थापित करता है। * अनुकरण के माध्यम से अच्छी आदतों की ओर उन्मुख होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	* घर-परिवेश, विद्‌यालय, त्योहार, प्रसंग, घटना के बारे में बताना। **उदाहरण - घर**-जन्मदिन,नामकरण, विवाह। **परिवेश** - मेला, शोभायात्रा, जुलूस।	* चित्र कार्ड * चार्ट * प्रसंग चित्र * कार्यक्रम चित्र	* घर-परिवेश, विद्‌यालय में होनेवाली घटनाएँ त्योहार प्रसंग आदि के बारे में अपना मत व्यक्त करने के लिए उद्‌यत होता है। * घटना-प्रसंग का क्रमबद्‌ध वर्णन करने का प्रयास करता है। * आँखों देखी घटनाओं का यथावत वर्णन करने की क्षमता विकसित होती है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	विद्यालय – शिक्षक दिवस, साक्षरता दिवस, शिक्षण मेला, गणतंत्र दिवस, विज्ञान दिवस आदि। **त्योहार** – दीपावली, ईद, क्रिसमस, पतेती, बैसाखी, ओणम आदि। **प्रसंग**–पारितोषिक वितरण समारोह, विद्यालय स्थापना दिवस, वृक्षारोपण आदि। **घटना**–आँखों देखी घटना, भूकंप, त्सुनामी, अतिवृष्टि, बाढ़ आदि।		* सांस्कृतिक विरासत से परिचित होता है। * सर्वधर्मसमभाव की भावना जागृत होती है।	
२.	* विद्यालय से संबंधित वस्तुओं के बारे में बताना, चर्चा करना। (तालिकाएँ, प्रयोगशाला, ग्रंथालय, खेल सामग्री, शिक्षक कोना/ विद्यार्थी कोना, संगणक कक्ष, शैक्षणिक सामग्री आदि।)	* आदर्श विद्यालय के चित्र	* चर्चा में सहभागी होता है। * व्यक्तिगत अभिव्यक्ति में पाठशाला की वस्तुओं के प्रति आत्मीयता विकसित होती है। * पाठशाला की वस्तुओं के संरक्षण करने की भावना जागृत होती है। * निःशंक होते हुए संभाषण की ओर उन्मुख होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * उपक्रम

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* राष्ट्रीय त्योहार एवं विद्यालयीन कार्यक्रमों में सहभागी होकर चर्चा करना। **राष्ट्रीय त्योहार–** स्वतंत्रता दिन, गणतंत्र दिन, शहीद दिवस, गांधी जयंती आदि। **विद्यालयीन कार्यक्रम–** हिंदी दिवस, विज्ञान दिवस, चित्र प्रदर्शनी, विज्ञान प्रदर्शनी, ग्रंथ प्रदर्शनी आदि)	* प्रासंगिक चित्र * जानकारी पट्ट * घोष वाक्य पट्टियाँ * सूचना पट्ट	* राष्ट्रीय त्योहारों के कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक सहभागी होता है एवं अपना मत व्यक्त करता है। * भाषण प्रतियोगिता में हिस्सा लेता है। * सूचना फलक पर लिखे हुए विवरण को कक्षा में बताता है। * भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को समझते हुए समाजसुधारकों एवं क्रांतिकारियों के प्रति आदरभाव जागृत होता है। * देशप्रेम एवं देशभक्ति का भाव विकसित होता है। * भारत की सांस्कृतिक विरासत से अवगत होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * मौखिककार्य * कृति
४.	* लघुकथा एवं घटनाओं का वर्णन करना– (अंकों का सही उच्चारण करना।) (१ से ५० अंक)	* चित्र * फोल्डर * चित्रकथा * अंक तालिका (अंकों एवं अक्षरों में)	* छोटी–छोटी कथाएँ कक्षा में प्रस्तुत करता है। हाव–भाव एवं आरोह–अवरोह के साथ प्रस्तुति में रुचि लेता है। * देखी सुनी हुई घटनाओं का अपने शब्दों में वर्णन करता है। * लघुकथा एवं घटनाओं के वर्णन से भावनाओं का समायोजन होता है एवं तनावमुक्त होता है। * लघुकथा के चरित्रों के साथ सहसंबंध प्रस्थापित करने का प्रयास करता है। नैतिक मूल्य विकसित होते हैं। * अंकों का सही उच्चारण करता है। भाषण–संभाषण व्यवहार में अंकों की उचित अभिव्यक्ति करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * उपक्रम

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	* बातचीत, संभाषण में शब्दों का मानक एवं स्पष्ट उच्चारण करना। (शब्द और वाक्य में आए हुए स्वर,व्यंजन, संयुक्ताक्षर का स्पष्ट एवं मानक उच्चारण करना) * मातृभाषा एवं हिंदी की विशेष ध्वनियों को समझकर उचित उच्चारण करना।	* **चार्ट** (स्वर,व्यंजन,संयुक्ताक्षर, विशेष वर्ण, शब्दों का चार्ट) * वाक्य पट्टी * मातृभाषा एवं हिंदी की विशेष ध्वनियों का तुलनात्मक चार्ट	* बातचीत, संभाषण में शब्द एवं वाक्य में आने वाले स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षरों, पंचमाक्षरों का स्पष्ट एवं मानक उच्चारण करने की ओर प्रवृत्त होता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की विशेष ध्वनियों का हिंदी के अनुसार उचित और स्पष्ट उच्चारण करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की विशिष्ट ध्वनियों में उच्चारणगत समानता एवं भिन्नता को समझते हुए बातचीत करता है। * भाषण प्रतियोगिता में भाग लेता है। * घटना, प्रसंगों पर निःशंक होकर चर्चा में सहभागी होता है। * घटना तथा प्रसंग वर्णन के माध्यम से विश्लेषण क्षमता का विकास होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्रः वाचन

कक्षा–छठी

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल–'मेल–मिलाप' अलग–अलग बच्चों के गले में चित्र कार्ड और शब्द कार्ड लटकाकर चित्रों और शब्दों की संगति बिठाते हुए शब्दों की पहचान कर वाचन करना/कराना	* वर्ण कार्ड * शब्द कार्ड * चित्र कार्ड	* मेल–मिलाप खेल में रुचिपूर्वक सहभागी होता है। * चित्र और शब्दों की संगति बिठाकर उनका आनंदपूर्वक वाचन करता है। * खेल के माध्यम से विद्यार्थी वाचन की ओर उन्मुख होता है। * तर्कशक्ति का विकास होता है। * शब्द भंडार में वृद्धि होती है। * परिसर में लगे पोस्टर्स,विज्ञापनों के चित्रों एवं शब्दों में संगति बिठाते हुए वाचन करता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	**अनुवाचन–**बालगीत, कविता, साहस कथा, विज्ञान कथा का वाचन करना।	* संदर्भ साहित्य * कथा फोल्डर्स * बालगीत–कविता चार्ट।	* बालगीत, कविता, साहसपूर्ण कथा आदि का रुचिपूर्वक अनुवाचन करता है। * शिक्षक द्वारा पढ़ी गई सामग्री को दोहराता है। * बालगीत–कविता के माध्यम से तनाव एवं भावनाओं का समायोजन होता है। * साहसभाव का संचार होता है। * कथा के माध्यम से सम अनुभूति एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होती है। * पूरक वाचन में रुचि बढ़ती है। * ध्यानपूर्वक अनुवाचन द्वारा आकलन क्षमता का विकास होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	* भित्तिचित्र,विज्ञापन,विद्‌यालयीन सूचना फलक एवं समाचारपत्र का वाचन करना।	* विज्ञापन पट्‌टी * वाक्य पट्‌टी * विज्ञापन सूचना फलक * चार्ट * समाचारपत्र	* विज्ञापन पट्‌टी, वाक्य पट्‌टी, विविध फलक चार्टों, समाचारपत्र पढ़ने में रुचि लेता है। * शुद्‌ध एवं मानक उच्चारण की ओर प्रवृत्त होता है। * विद्‌यालयीन सूचना फलकों के संरक्षण की प्रवृत्ति जागृत होती है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
३.	* परिवेशगत सार्वजनिक स्थलों के सूचना फलक का वाचन करना।	* सूचना फलकों के प्रतिकृति चार्ट। * सूचना फलक। * सूचना वाक्य पट्‌टी।	* परिसर के सार्वजनिक स्थलों के प्रतिकृति चार्ट के वाचन में रुचि लेता है। * परिसर के सार्वजनिक स्थलों की सूचनाओं का रोचक वाचन करता है। * परिसर के डाकघर, बैंक, अस्पताल, रेल, बस स्थानकों के प्रति अपनत्व की भावना जागृत होती है। * सार्वजनिक स्थलों के संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। * पूरक वाचन में रुचि पैदा होती है। * शुद्‌ध एवं मानक वाचन की ओर उन्मुख होता है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * प्रकल्प
४.	* **मुखर एवं मौन वाचन–** विराम चिह्नों सहित परिच्छेद का मुखर एवं मौन वाचन।	* परिच्छेद चार्ट (विरामचिह्नोंयुक्त) * समाचार पत्र	* विरामचिह्नयुक्त परिच्छेद एवं अक्षरों में लिखे १ से ५० तक के अंकों का रुचि– पूर्वक मुखर एवं मौन वाचन करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* १ से ५० तक अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन।	* अक्षरों में लिखे अंकों के कार्ड एवं चार्ट।	* उचित आरोह एवं अवरोह, तान–अनुतान से मुखर वाचन की प्रवृत्ति बढ़ती है। * मौन वाचन के माध्यम से ध्यान एकाग्रता की क्षमता विकसित होती है। * आकलन क्षमता का विकास होता है। * पाठ्येत्तर सामग्री के वाचन की प्रवृत्ति बढ़ती है। * शुद्‌ध एवं मानक वाचन की ओर उन्मुख होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन।
५.	* मुहावरों–कहावतों, शब्दयुग्मयुक्त परिच्छेद का वाचन करना।	* मुहावरों– कहावतों का चार्ट * शब्दयुग्म का चार्ट * छोटे–छोटे परिच्छेदों के चार्ट	* मुहावरों, कहावतों, शब्दयुग्मयुक्त परिच्छेद का वाचन करता है। * तान–अनुतान, उचित आरोह–अवरोह के साथ वाचन की ओर उन्मुख होता है। * हिंदी साहित्य की विरासत से परिचित होता है। * शब्द संपत्ति में वृद्‌धि होती है। * संभाषण में मुहावरों–कहावतों, शब्दयुग्मों के प्रयोग की ओर उन्मुख होता है। * वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * भाषिक सौंदर्य–बोध की ओर अग्रसर होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * प्रकल्प * सहपाठी मूल्यांकन।

भाषाई कौशल/क्षेत्र : लेखन

कक्षा–छठी

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल–'विरासत की पहचान' **कृतिः** संतों, कवियों, लेखकों, महापुरुषों, ऐतिहासिक स्थलों, वैज्ञानिकों के चित्रों की एक– एक पर्ची उठाना, हाथ में आई पर्ची के चित्र का नाम बोर्ड पर लिखना।	* संतों, कवियों, वैज्ञानिकों, ऐतिहासिक स्थलों आदि की पर्चियाँ।	* पर्ची उठाकर पर्ची के चित्र का नाम बोर्ड पर लिखता है। * खेल के माध्यम से तनाव एवं भावनाओं का समायोजन होता है। * महान विभूतियों के प्रति आदरभाव जागृत होता है। * सांस्कृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक विरासत के प्रति आत्मीयता एवं संरक्षण भावना विकसित होती है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	* **अनुलेखन–सुलेखन करना।** (वाक्य, परिच्छेद)	* वाक्य पट्टी * परिच्छेद चार्ट * घोष वाक्य * सुवचन पट्टी	* दिए हुए वाक्यपरिच्छेद का अनुलेखन–सुलेखन करता है। * सुडौल एवं सुपाठ्य लिखने की ओर उन्मुख होता है। * लेखन में एकाग्रता की वृद्धि होती है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
२.	* **श्रुत लेखन–शुद्ध लेखनः** (परिच्छेद) १ से ५० तक अंकों का अक्षरों में लेखन।	* परिच्छेद चार्ट * संदर्भ साहित्य * १ से ५० तक के अंकों का अक्षरों में लिखा चार्ट.	* दिए गए परिच्छेद का रुचि लेते हुए श्रुतलेखन एवं अनुलेखन करता है। * १ से ५० तक के अंकों को अक्षरों में लिखता है। * निर्दोष एवं शुद्ध लेखन की ओर प्रवृत्त होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* अंकों के अक्षरों में लिखे अंक कार्ड।	* सुडौल सुपाठ्य लेखन की वृत्ति बढ़ती है। * श्रुत लेखन-शुद्ध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेता है।	* सहपाठी मूल्यांकन
३.	* हिंदी मानक वर्तनी के अनुसार लेखन (विराम चिह्नों सहित)	* विराम चिह्नों के संकेत चिह्न एवं उनके नामों का चार्ट। * विराम चिह्नयुक्त परिच्छेद का चार्ट।	* विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए मानक वर्तनी के अनुसार लेखन करने की ओर अग्रसर होता है। * अपने लेखन में उचित विराम चिह्नों का उचित जगह पर प्रयोग करता है। * विराम चिह्नयुक्त लेखन के माध्यम से स्वयं अनुशासित जीवन की ओर अग्रसर होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपुस्तक कसौटी * सहपाठी मूल्यांकन
४.	* पठित गद्य-पद्य का आकलन लेखन (सरल परिच्छेद पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना) (देशप्रेम, शांति, समानता पर आधारित)	* संदर्भ साहित्य * सरल परिच्छेद चार्ट * प्रश्नसंच	* पठित गद्य-पद्य का एकाग्रता के साथ आकलन करता है। * परिच्छेद में लिखे गए विचारों को आत्मसात करता है। * परिच्छेद के आधार पर छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर मौखिक एवं लिखित रूप में देने की क्षमता विकसित होती है। * विद्यालय में शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के सटीक उत्तर लिखने की क्षमता विकसित होती है। * विश्लेषण एवं निर्णय क्षमता का विकास होता है। * देशप्रेम, शांति, समानता का भाव जागृत होता है।	* कृति * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* घर एवं परिवेश में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता में वृद्धि होती है। * आत्मविश्वास बढ़ता है।	
५.	* स्वयं स्फूर्त लेखन : (रूपरेखा के आधार पर घरेलू पत्र, निबंध, कहानी लेखन)	* संदर्भ साहित्य * पत्र लेखन हेतु रूपरेखा चार्ट * निबंध लेखन हेतु रूपरेखा चार्ट * कहानी की रूपरेखा का चार्ट।	* स्वयं स्फूर्त भाव से रूपरेखा के आधार पर पत्र एवं कहानी लेखन हेतु चर्चा करता है। * दी गई रूपरेखा के आधार पर पत्र, निबंध कहानी लेखन करता है। * चित्र का वर्णन लिखित रूप में करता है। * तर्कशक्ति का विकास होता है। * संयोजन क्षमता बढ़ती है। * सर्जनशीलता का विकास होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * स्वाध्याय * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन।

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल–'अपना साथी ढूँढ़ें' **कृतिः** कुछ शब्द और उनके समानार्थी शब्दों के कार्ड विद्यार्थियों में दिखाते हुए पकड़ना। एक विद्यार्थी का आगे आकर अपने शब्द कार्ड को पढ़ना व समानार्थी शब्द कार्ड वाले साथी को ढूँढ़कर जोड़ी बनाना।	एवं उनके समानार्थी शब्दों के शब्द कार्ड	* रुचिपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * आकलन एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। * शब्द–संपदा में वृद्धि से भाषण एवं लेखन की सहजता में वृद्धि होती है। * प्रभावशाली एवं रोचक लेखन की ओर अग्रसर होता है। * मित्रता तथा सहयोग की भावना का विकास होता है।	* कृति * मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण *सहपाठी मूल्यांकन
	* पुनरावृत्ति– वर्ण परिचय,शब्द परिचय, लिंग, वचन प्रयोग। * शब्दयुग्म प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग करना।	* वर्ण कार्ड * शब्द कार्ड * शब्दयुग्म कार्ड * मुहावरों की पट्टियाँ * एकवचन–बहुवचन दर्शानेवाले कार्ड।	* कक्षा पाँचवीं में पढ़े हुए वर्ण, शब्द के लिंग, वचन का संभाषण में समझते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग करता है। * लेखन में इनका उचित स्थान पर सही रूप लेखन हेतु प्रयोग करता है। * अपने संभाषण एवं लेखन में शब्दयुग्मों और मुहावरों का प्रयोग करता है। * वर्गीकरण और विश्लेषण की क्षमता बढ़ती है। * शुद्ध वाक्य रचना की ओर प्रेरित होता है।	* कृति * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपुस्तक कसौटी * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम * प्रकल्प
१.	* **शब्द भेद** (स्थूल परिचय) विकारी–अविकारी शब्द भेदों का प्रयोग के माध्यम से परिचय करना कराना।	* विकारी–अविकारी शब्दों के चार्ट * फोल्डर्स * वस्तुओं के नामों के चार्ट	* विकारी–अविकारी शब्दों को पहचानता है और वाक्यों में प्रयोग करता है। * वर्गीकरण की क्षमता बढ़ती है। * शब्दों के साथ उचित प्रत्यय एवं उपसर्ग का प्रयोग करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	उपसर्ग तथा प्रत्यय का प्रयोग के माध्यम से परिचय करना/कराना।	* वाक्यपट्टी * उपसर्ग तथा प्रत्यययुक्त शब्दों के चार्ट	* उपसर्ग तथा प्रत्ययों को पहचानता है तथा उनका वाक्यों में प्रयोग करता है। * संभाषण एवं लेखन में प्रत्यय एवं उपसर्गयुक्त शब्दों का प्रयोग करता है। * नए शब्दों की रचना करने की क्षमता में वृधि होती है।	* उपक्रम * प्रकल्प
२.	* **क्रिया के काल की जानकारी प्राप्त करना** (सामान्य परिचय)	* भूत, वर्तमान, भविष्य काल की क्रियाओं के अलग–अलग चार्ट	* भूत, वर्तमान, भविष्यकाल की क्रियाओं को पहचानता है। * भूत, वर्तमान, भविष्य काल के अनुसार क्रियाओं का संभाषण एवं लेखन में प्रयोग करता है। * विभिन्न काल की विविध क्रियाओं को पहचानता है। * कालानुसार क्रियाओं के विश्लेषण का विकास होता है। * क्रिया के काल की जानकारी से संभाषण एवं लिखित वाक्य रचना की शुद्धता में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
३.	* **पुनरावृत्तिः** (अल्पविराम(,) अर्धविराम(;) पूर्णविराम(।), प्रश्नचिह्न(?), विस्मयादिबोधक चिह्न (!)	* विराम चिह्नों के संकेतों के नाम एवं उनके कार्ड। * परिच्छेद चार्ट (दिए गए विराम चिह्नों संयुक्त परिच्छेद)	* वाक्य में प्रयोग द्वारा अल्पविराम, अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नचिह्न से अवगत होता है। * उपरोक्त चिह्नों की संकल्पना एवं संदर्भों की समझता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	अवतरण चिह्न '......', ''......''		* संभाषण एवं लेखन में विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करता है। * आदर्श वाचन प्रतियोगिता, भाषण/वक्तृत्व प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * विश्लेषण एवं तर्क क्षमता का विकास होता है।	* स्वाध्याय * सहपुस्तक कसौटी * सहपाठी मूल्यांकन
४. ५.	* **वर्तनी का प्रयोग–** (वर्ण, विशेष वर्ण, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, हल चिह्न आदि के मानक रूपों का सरल शब्दों एवं वाक्यों में लेखन) * कारक चिह्नों का प्रयोग	* वर्ण कार्ड * संयुक्ताक्षर युक्त शब्द कार्ड * अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग एवं हल चिह्नों के संकेतों और नाम के कार्ड * कारक एवं उनकी विभक्तियों के चार्ट	* वर्ण, विशेष वर्ण, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर, अनुनासिक, अनुस्वार विसर्ग, हलचिह्न से अवगत होता है। * वाचन एवं संभाषण में उपरोक्त चिह्नों के मानक रूपों का प्रयोग करता है। * लेखन में इन चिह्नों के प्रयोग से अवगत होता है। * संभाषण एवं लेखन में उचित विभक्तियों का उचित स्थान पर प्रयोग करता है। * तर्क, विश्लेषण, एवं वर्गीकरण की क्षमता के विकास की ओर उन्मुख होता है। * हिंदी की भाषा संरचना से परिचित होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * गृहकार्य * स्वाध्याय

भाषाई कौशल/क्षेत्र : व्यावहारिक सृजन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल–'मिले सुर मेरा तुम्हारा'** **कृति** : एक विद्यार्थी सामने आकर सुबह उठकर विद्यालय आने तक दिनचर्या की कृतियों को क्रमानुसार कहता है। **उदाहरण–** मैं सुबह उठकर मंजन/ब्रश करती हूँ। दूसरा विद्यार्थी उसका अभिनय करता है। अगला विद्यार्थी दिनचर्या का अगला क्रम कहता है– मैंने स्नान किया–अभिनय इसी तरह प्रत्येक विद्यार्थी को अवसर देना।	–	* रुचिपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * अभिव्यक्ति का कौशल विकसित होता है। * आत्मविश्वास में वृद्‌धि होती है। * अभिनय क्षमता का विकास होता है। * स्थितियों की क्रमबद्‌ध वर्णन की क्षमता विकसित होती है। * जीवन में क्रमबद्‌धता एवं अनुशासन के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। * विद्‌यार्थी में परस्पर एवं शिक्षक के बीच अंतरक्रिया में वृद्‌धि होती है।	* कृति * मौखिककार्य प्रात्यक्षिक निरीक्षण
१.	* **अनुवाद** : मातृभाषा के वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करना।	* वाक्य पट्‌टी * वाक्य चार्ट * घोषवाक्य पट्‌टी * सुविचार पट्‌टी	* अपनी मातृभाषा के वाक्य का हिंदी में अनुवाद करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी के शब्दों और वाक्यों की संरचना में समानता और भिन्नता को समझने का प्रयास करता है। * मातृभाषा तथा हिंदी में सहसंबंध स्थापित करता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* मातृभाषा के वाक्यों के विचार एवं भाव समझकर हिंदी में अनुवाद करता है। * मातृभाषा के साथ–साथ हिंदी के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। * व्यावहारिक जीवन में हिंदी के प्रयोग की ओर उन्मुख होता है। * रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।	
२.	* **व्यावसायिक लेखन–** * फेरीवालों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों का लेखन * परिचित कार्यालयीन शब्द तथा वाक्यों का लेखन	* फेरीवालों के चित्र। * फेरीवालों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों का चार्ट। * डाकघर, बैंक, शालेय कार्यालय, टिकटबुकिंग कार्यालय, अस्पताल आदि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के चार्ट। * कार्यालय के चित्र।	* फेरीवालों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों एवं परिचित कार्यालयीन शब्दों वाक्यों का लेखन करता है। * कार्यालयीन शब्दों का अपने भाषण–संभाषण में प्रयोग करता है। * परिचित फेरीवालों एवं कार्यालयीन व्यक्तियों के प्रति आदरभाव और आत्मीयता विकसित होती है। * रचनात्मकता का विकास होता है। * परिचित कार्यालयों के प्रति संरक्षण की भावना विकसित होती है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
३.	* **नाट्यकला –** परिसर के व्यवसायियों का एक पात्रीय अभिनय करना।	* परिसर के व्यवसायियों के चित्र, चार्ट।	* परिसर के व्यवसायियों और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य एवं कार्य पद्धति का अभिनय करता है।	* कृति– * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* परिसर के व्यवसायियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले साधन/ औजार के चार्ट।	* आत्मविश्वास एवं निडरता आदि में वृद्धि होती है। * परिसर के व्यवसायियों एवं उनके व्यवसाय के प्रति आदरभाव विकसित होता है। * भावी जीवन के व्यवसाय के चुनाव की ओर उन्मुख होता है। * अभिनय के माध्यम से भावनाओं का समायोजन होता है। * परिचित व्यवसायियों एवं फेरीवालों के साथ चर्चा करता है।	* कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	* **लिप्यंतरण–** हिंदी संदेशों का रोमन लिपि में लेखन करना. **उदाहरण–** जन्मदिन की बधाई (JANMDIN KI BADHAI)/ (Janmdin ki badhai) जय हिंद (JAI HIND/Jai Hind) अंग्रेजी के शब्दों संदेशों का देवनागरी (हिंदी) में लिप्यंतरण करना. **उदाहरण–** ANTHONY (अंथोनी) BANK (बैंक) Go to bank : गो टू बैंक।	* हिंदी में लिखे संदेशों का चार्ट * सुवचन चार्ट * घोष वाक्य चार्ट	* हिंदी में लिखे संदेशों को रोमन लिपि में लिखता है। रोमन लिपि के संदेशों को देवनागरी में लिखता है। * घोष वाक्य, सुवचनों के लिप्यंतरण में रुचि लेता है। * स्वयंस्फूर्त होकर संदेश तैयार करता है। * संदेशों का आकलन करता है। * रोमन लिपि के माध्यम से हिंदी सीखने का प्रयास करता है। * हिंदी एवं अन्य भाषाओं के प्रति आत्मीयता विकसित होती है। * देवनागरी एवं रोमन लिपि तथा भाषा में समानता एवं भिन्नता से परिचित होता है।	* कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	* **सांकेतिक चिह्न–** * मुद्रित शोधन # अलग करना ʎ शब्द डालना () जोड़ना d निकालना	* सांकेतिक चिह्नों के नाम एवं चिह्नों का चार्ट।	* मुद्रित शोधन के सांकेतिक चिह्नों से अवगत होता है। * दूसरे विद्यार्थी द्वारा किए गए लेखन कार्य का इन चिह्नों का प्रयोग करके शुद्ध करता है। * इन चिह्नों से सुपरिचित हो जाने पर शुद्ध और निर्दोष लेखन की ओर अग्रसर होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय